2. <u>माधुर्य</u> :- मधुरता के साथ ~~किया~~ किया गया मौखिक पठन सुनने वालों को प्रिय लगता है तथा प्रभावपूर्ण होता है।

3. <u>वर्णों का स्पष्ट उच्चारण</u> :- मौखिक पठन में वर्णों का उच्चारण स्पष्ट होना चाहिए ताकि सुनने वाला शुद्ध-शुद्ध सुन सकें।

(4) <u>समुचित पदच्छेद</u> :- मौखिक पठन करते समय पदच्छेद पर ध्यान देना चाहिए। लम्बे-लम्बे पदों को समुचित सन्धि विच्छेद एवं समास-विग्रह द्वारा अलग-अलग कर लेने से मौखिक पठन में सरलता होती है। इस प्रकार पदों को उचित रूप से सन्धि-विच्छेद एवं समास-विग्रह द्वारा मौखिक पठन आसान हो जाता है तथा छात्र इसे सरलता से समझ जाता है।

(5) <u>समुचित स्वर</u> :- मौखिक पठन का प्रमुख तत्व स्वर है। मौखिक पठन में स्वर का

करना महत्व है। अनुमान आरोह-अवरोह के साथ पढ़ने से मौखिक पठन प्रभावपूर्ण हो जाता है।

(6) धैर्य :- मौखिक पठन में धैर्य का विशेष महत्व है। मौखिक पठन करते समय धैर्य पर अधिक ध्यान देना चाहिए। धैर्यपूर्वक किया जाना मौखिक पठन प्रभावशाली होता है।

(7) उचित लय :- उचित लय के साथ किया गया पठन प्रभावशाली होता है। उचित लय के साथ किया गया मौखिक पठन सुनने में प्रिय लगता है।

Steps of Reading (पठन के सोपान)

पठन के मूलतः तीन सोपान हैं।

1) मुद्रित प्रतीकों की पहचान :- पठन क्रिया का प्रथम सोपान मुद्रित प्रतीकों की पहचान है। इसमें वर्णमाला ध्वनियों का प्रतीक है। इसके लिए दो बातों का ज्ञान आवश्यक है। प्रथम बालकों की प्रतीकों को पहचानने की क्रिया सही होनी चाहिए। यहां यह ध्यान रखना

जाना चाहिए कि बालक के साथ जानकारी न की जाय।

(2) अर्थ ग्रहण :- अर्थ ग्रहण पठन द्वितीय सोपान है। इसमें किसी के पाठ्यवस्तु को पढ़ने के साथ-साथ उसे उस पठन के अर्थ को समझना अति आवश्यक है। किसी प्रकार की जानकारी तथा उसके शब्दों का स्पष्ट अर्थ नहीं जान पाता है।

(3) अर्थ ग्रहण का ~~प्रयोग~~ उपयोग :- पढ़ी हुई सामग्री का जीवन में उपयोग तभी माना जाता है जब बालक अपने पठन से प्राप्त ज्ञान को भविष्य में ~~उपयोग~~ उपयोग में ला सके तथा उस ज्ञान का स्पष्टीकरण करने की उसकी सामर्थ्य हो और मौका मिलने पर उसका स्वयं मूल्यांकन हो जाता है।

Levels of Reading

(पठन के स्तर)

पठन के निम्नलिखित स्तर हैं

(1) नियत पठन — Studying नियत पठन

सस्वर पठन :- प्राथमिक कक्षाओं में बालकों को किसी विषय-वस्तु कण्ठस्थ करने के लिए सस्वर पठन पर जोर दिया जाता है।

सस्वर पठन की विशेषता :-

(1) निःसंकोच और आत्मविश्वास के साथ पठन के लिए।

(2) शुद्ध एवं स्पष्ट उच्चारण।

(3) कक्षा के आकार तथा छात्रों की संख्या के अनुसार ऊँचे-ऊँचे एवं मंद स्वर में दूरी का ध्यान रखते हुए पठन।

(4) भावानुसार वाणी का उतार-चढ़ाव

(5) उचित गति के साथ बोधगम्य मधुर वाणी।

(6) प्रसंगानुसार

(7) उचित भाव भंगिमा।

(8) ~~उचित~~ उचित आसन के अनुसार
आसन

(9) वाक्य के स्तर पर पठन।